

नित्य नेगमें मंगल भोगमें येइ माखन वूरा संधाना दूध कोउमल
 ई माखन वूरा संधाना दूधको उवरा दहीको उवरा ओम खडवुजा
 की ऋतुमें उवारीया आगे जलकी झारी १ बीड़ा २ मंगल भोगमें
 मरही माखन वूरा संधाना दहीको कयेरा गोपी वल्लभमें भातदार
 कही मिरचको दोष छेके स्याक पूरी खरखरी कयेरीये होण
 लीवू आदा पाचरी की ऋतुमें आदा पाचरी छेदो की ऋतुमें छेद
 बिलसासकी ऋतुमें बिलसास मुरंवा घृतकी बरनी पना आम
 रसकी ऋतुमें पना आंवरस खडवुजाकी आंवकी उवरीया रख
 ता छेके शाक २ वा ४ भुजेना १ वा २ अक्षवत्तीया सुजन्मा
 धूर्ति कांछा मंदिरा मस्तन वरुमें वरु की ऋतुमें
 देव दुर्गा भोग गोपी वल्लभमें खडवुजा की झारी २ बीड़ा २
 ग्वाल होव शरी गोपी वल्लभमें खडवुजा की झारी २ बीड़ा २
 नारंग पास पलनाम बीड़ा दो जो बिलईमें व कांछा मंदिरा
 खेवा की गोली पेडा बरपी रथगनासुं १५ दिन ताई बीज नि-
 रोजी की गोली जन्माष्टमी २५ दिन ताई साम पिकी पंजीरी की
 गोली शीतलद्वय १५ दिन ताई पदा मको सीरा बरपी आगे
 वा एक महिना तांडा पाचरी १५ दिन ताई तिलुवाकी
 गोली आगे आंवके दिनमें आंवको सीरा बरपी आगे पलना-
 को भोग राज भोगमें आवे. राज भोगमें भात दार मूग कही घृत
 की कयेरा मिरचको स्याक जलको ज्वाला छेके स्याक कयेरी
 लोथे परत भातकी अड बंगाकी ऋतुमें अड बंगा गोपी वल्लभमें
 राज भोगमें शमन भोगमें एसी है पापड एसेही बिलसास एसेही
 आंव खडवुजा पना अमरस नारंगीको पना माखन वूरा कयेरी
 ये होणकी. लीवूकी छेदकी वा आदा पाचरी संधानाकी कयेरी
 दही खेण दूधको कयेरा लुचैई खीर रायता मीठे स्याक भुजे
 ना चूनकी पूडी गोपी वल्लभमें तथा राज भोगमें ऋतु अनुसार
 छाल टेवी भरता केरीके शरकी राइकी तुलसी राखोदक धूप
 दीप बीड़ी बीड़ा जलकी झारी गकुरजीकी २ ओर स्वस्तिपत्ती

एक एक श्रीमहाभुजीकी एक । अनोसरके बंयमें मण्डी माख-
न वूरा संधाना झारी ये सब स्वल्पनकी भरे खोवा मलाई मिगई
मेवा फणी बरामकी क्योरी लोण मिरच वूराभीको दही फूलादिक
मुकुट किरीट धरे जा दिना ता दिना मेवाकी खीचडी आरोगे भो-
गके दर्शनकी झारी संध्या भोगमें मण्डी संधाना आम खडवूजाकी
त्रडलुमें आम खडवूजा वूराकी क्योरी ग्वाल होय राखन भोग-
में भात दार पाण्ड कबी स्याक जलकी क्योरी घृत पूजी स्याक
लोण संधाना आंवकी डवरिया खडवूजा वूराकी क्योरी जलकी
झारी २ बीडा ४ अनोसरके दिनमें अनोसर तद्वत् राख्याको सा-
ज दशमीके रादरी में मिरचारी कर्क ११ वं गोपी कृष्ण भोग
रोटी बडीको स्याक द्योरी में भात दार पाण्ड वूराकी क्योरी स्याक
क २ भुजेना पकोडी पकोडी मिरचारी स्याक द्योरी में भात दार
पकोडीकी कटी मिरचारी स्याक भुजेना पकोडी धरकें पारल
में सेव सीरा पूरी हेखडी चालनी सब तरेकी कदली फूलादिक
सैंधो लोण मिरच वूरा चालनी सब तरेकी राजभोगमें तथा उत्सा-
पनमें १२ कुं १८ कुं तद्वत् की सर आरोगे ४ रुपैयाको कुडको
२० मलुआको होय वूराकी दार पंडोडीवी वा बडीकी कबी कर
१८ पक्रानके लुडवा मण्डीके ४ खीरके ४ सीराके ४ दही
भातके या प्रमाण फलायके दूने जोगने कुडकारा होय :

२५

शुभि के शिर आरोह शोभयन्ति मुखं मम । मुखं हि मम शोभ-
व भूवा ए स च भर्ग कुरु । या माह रघुं म देमि श्रुद्वायै कामा-
यान्यै । इमां वामपि न ह्येहं भर्गेन सह क्वचि सा ॥ १ ॥

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 5
.vallabhacharya-agrahara.org
.vallabhacharyakrupa.org
(Pushtimargiya Research Portal)

Sansthan
Shrimad Gokulnathji Maharaj
Mota Mandir

• वरस दिनमें खाली दिन आवे तो नीचे प्रमाण शृंगार होय
• + बीचको खाली दिन

कार्तिक वदि ३० कूं जो अन्नकूट होय और २ दूज कूं भाई दूज होय तो
कार्तिक सुदी १ एकम कूं गुलबी जरी के वस्त्र पन्ना के आभरण गोलकी
रा सादा चंद्रका परीती शृंगार हलको कर्णफूल इकैरे और गंडेख-
रूप कूं चेरदार बागा.

• चैत्र वदी १ एकम कूं जोल होय और फागुन सुदी १४ कूं होरी होय
तो बीचके दिन खाली १५ पुनमको दिन वा दिनकी शृंगार.

फागुन सुदी १४ और चैत्र वदी १ जोल होय तो सुदी १५ दिन खाली
होय तो नीचे लिखे शृंगार. बीचके नैनसख के वस्त्र - बाहारकी
खोडकी की पाग - आभरण मोना त. सोना के मिलमा - चेरदार
वाचा शृंगार हलकी श्री अंगन कय मरण के नीचे अंक चौकी त.
माला १ छोटी त. गादीपे हाव १ त. माला चार ४ और गुंजाकी
माला कपोलपे गुलाल के दाऊ और टपका करने वदी रंगनी
नहीं.

श्री गुरुजी को सावन की हिंजोरा विराज के मुहूर्त में
जा करस वस्त्र आवे होय तो वरस सावन वदी २ के दिने
हिंजोरा विराजे वा दिन हिंजोरा के शृंगार होय तथा असा-
ड सुदी १५ के दिना असाडी पुन्यो के शृंगार होय सो सावन
वदी १ को दिन खाली वा दिन शृंगार नीचे प्रमाणे.

श्वेत वस्त्र मलमल के बहारकी खोडकी की पाग श्वेत चंद्रका
शृंगार उष्ण काल को हलको गंडे स्वरूप वा दिन छेड़ी परदनी
धरे तथा चंद्रमा अछे होय तो एकम कूं हिंजोरा और ये शृंगार
असाड सुदी १४ के दिना करने.

श्रावण वदि २ पीले रंगके वस्त्र तः अंगको तर्तिका तः पी-
 ले श्याम खिडकीकी पाग तैयार करि राखनी. आभरण सब पन्नाके भा-
 ग मोतीनकी लीली मणीनकी माहा नेपुर कटपेच पोंची बाजु
 बंद हांस अलकावली तिलजी जेहर कर्णफूल सीसफूल कलंगी वेणु
 वेन ये सब पन्नाके निकालने श्रीमस्तकपे पन्नाकी मोररिखा या
 प्रमाण आभरण सिद्ध करि राखने पन्नाके आभरणको शृंगार
 करने सो पहले दिनसु हलको. वहीत हलको नही भारी. चरणा-
 रविन्द पर्यन्त. पन्नाके आभरण थोड़े होय तो बीचमें पीरोजाके
 आभरण धरावने. जै जे नहि होय सो कर्णफूल दो दो धरावने
 चार नहीं धरावने. साजकी पिछवाइ पीली बांधनी साडे चार कजे
 घंटा बंद मोटा आभरण बीसके दिनहो नकार. सप्त भोग ताई
 नित्य रीत vallabhacharyaagrahara.org पीछे
 जरीके भारी. vallabhacharyaagrahara.org पीछे आंगर करने
 (Pusthikangya Research Project) उथापन भोगको सेवा करने बसवने पहले पीछे के दिन उत्स-
 वकी सिद्धकी सुजनी बिछाई होय तो
 आवे ताहां ताई नित्य रीत प्रमाण सेवा पोंचनी तावखत दूसरो तः
 तीसरो मुखिया बांदीके हिंडोलाक पीली झालर बांधनी तथा पीली
 सिंघासन बिछावनी तथा बाजुके दोनो हिंडोला नमें गारी ताकिया
 पे कोरी सुपेती चढाईके बिछावनी झालर खालकी दाह रहेवे दे-
 नी संध्या आरती भये पीछे मुखियाजी वेणुवेन बडे करें. सं-
 ध्याती भये पीछे मुखियाजी आपटियाकू करे जो तिवारीकी जाली
 बंद कर देनी दूसरो मुखिया बगली ताकिया उगवे फेर
 झारी प्रसादी उगवके खंगोरके ढांक राखे. तीसरो मुखिया उवराकी
 सोनाकी क्योरी तथा उवरा धरवेको कूजाये सिंघासन पे धरे फेर
 फूलको झाड उगवे वडे मुखियाजी माहा बडी करवे शय्याकी
 तः कडीमें साजे. उवरा भोग धरे दूसरो तीसरो मुखिया
 पंखा चमर हिंडोलाके पास तैयार करि राखे. मुखियाजी भोग
 धर चुके पीछे हिंडोला में बीडा साजे तः माहा साजे दूसरो मु-
 खिया झूमक बांधे. मुखियाजी दोइ छोटी झारी भरवे शय्याके
 पड्याके ऊपर राखे फेर उवरा भोग सरावे मुखवस्त्र करवे श्रीग-
 न्नाकी तः हिंडोला में पछावे. दूसरो तीसरो मुखिया दूसरो

सुधा स्रजानि पोछे १५ दिन त. ५

रथ यात्रा के दिन श्रृंगार बड़े भये पीछे पाद
सोनी-चे प्रमाराग.

जोउ पहिले श्रीमस्तक पे ५ को होय सो ३ को भवे बु.

श्रीश्रृंग मे हाँस पदक के लवल माला श्रीगोबुद्धि ने

श्रीहस्तके बाहर सुँ आवे

गद्दी पे १ माला मोतीकी २ ~~माला~~ हरी मराठी वारी

२ लाल मराठी वारी हरी को १ माला २ मोतीकी पीछे

जुंजा माला.

हरी मराठीकी माठाही कठला कही जाय हे

रथ को तामे। कठला नाम बदलवानही नबनवानही

पीछे पु आवे

मोर शिखा कतरा चट्टिका को ईभी होय एकही आवे

माला बीच को

वामन द्वादशी के दिन यशोपवीत के

उ १ बीचमे तथा

ठिकाने कठला धरे हे.

तो प्राड़ी आवे

हं होरा न कभी बे नही आवे;

मोहि का तप्रावायो

आवे.

दान रुका दशी के दिन गजमेरा के शक्ति समये

ब्रज मे धरे जाय हे सो नही आवे

जन्माष्टमी कूं ही ~~क~~ पद्माभूत वारो धार

जहां पध बोया जाय वहां हरी को प्रबदल

माधुने ओर उत्सव न कूं वही नबन माने

स्तान के पीछे पाद पु कु मंडिर के

दोलो सब के दिन रंग विरंगी गुलान नही उडे

मान लाग ही उडे.

सी चां दी की जेमनी आवे सोता की बाँई आवे

सिंहासन पे कलश न ही आवे

श्या के जेमनी प्राड़ी श्रीमस्तक

नही आवे.

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 5
vallabhacharya-agrahara.org
vallabhacharyakrupa.org
(Pushimargiya Research Portal)

Sansthan
Shrimad Gokulnathji Maharaj
Mota Mandir

